

विद्युत दर्पण

पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका
वर्ष 2007-2008

अंक-6

जनवरी 2008

सम्पादकीय

प्रत्येक वर्ष के समान वर्ष 2007 भी बीत गया और वर्ष 2008 दरवाजे पर खड़ा हुआ-सा दिख रहा है। जब-जब यह संधिकाल आता है मस्तिष्क स्वाभाविक रूप से पीछे मुड़ कर गत वर्ष की उपलब्धियों अथवा सफलताओं और अनुत्तरित चुनौतियों की ओर देखने लगता है। विद्युत दर्पण का पुनर्प्रकाशन आरम्भ हुए एक वर्ष से कुछ अधिक ही समय बीता है किन्तु इस बीच सहयोगी अधिकारियों-कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरूचि और कौशल देखने को मिला। सुबोध और सरल हिन्दी में कविताओं, चुटकुलों, लघु कथाओं तथा तकनीकी लेख के साथ-साथ लोक भाषाओं में गीत और कविताओं ने भी विद्युत दर्पण को गौरवान्वित किया। किन्तु यह तो ऊँट के मुँह में जीरे के जैसा है और पक्षेविसमिति अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखकीय यात्रा अभी आगे जानी है। इतनी आगे कि जो भी विद्युत दर्पण पढ़े, वह इस यात्रा में स्वतः जुड़ता चला जाए। इन्हीं भावों को किसी शायर ने यूँ व्यक्त किया है:- "मैं अकेला ही चला था, जानिबे मंजिल मगर, लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया।" नए वर्ष में विद्युत दर्पण का कारवां भी अनवरत रूप से और सहज गति से बनता रहे और आगे बढ़ता रहे, पक्षेविसमिति के सभी सहयोगी इसी दिशा में प्रयास करते रहेंगे, ऐसी आशा और विश्वास है।

हम सभी भारत के नागरिक और भारत सरकार के कर्मचारी हैं। इस नाते हमारी भूमिका और दायित्व भी दोहरे हैं। हमें भारत के नागरिक होने के नाते अपने कर्तव्यों का पालन तो करना ही है, उससे ज्यादा हमें भारत सरकार के अंग के रूप में अपना दायित्व भी निभाना है। आज हमारे देश में ऊर्जा की कमी एक बहुत बड़ा संकट है। उत्पादन आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है। उत्पादन और आवश्यकताओं का अंतर निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। इसे रोकना होगा। घरों में कम ऊर्जा से अधिक परिणाम देने वाले उपकरण इस्तेमाल करने होंगे और ऊर्जा बचाने के अन्यान्य उपाय अपनाने होंगे, जैसे सूर्य के प्रकाश और प्राकृतिक वायु का अधिकाधिक सेवन करना। इसके अलावा कार्यालयों में भी विद्युत-ऊर्जा का यथा आवश्यकता उपयोग करना चाहिए और जब आवश्यकता न हो तब पंखे, एसी मशीन, हीटर बंद कर देने चाहिए। खिड़कियों से आने वाली तेज धूप से बचने के लिए वेनेशियन ब्लाइंड्स का उपयोग कर सकते हैं, गहरे रंग की सन-फिल्म का नहीं। यहां भी प्राकृतिक वायु का मार्ग न रोकें और एसी का कम से कम उपयोग करें। इस तरह हम आने वाले वर्ष में ऊर्जा बचत का संकल्प लेंगे तो दो लाभ होंगे। जरूरतमंद क्षेत्रों को अधिक बिजली मिलेगी और उत्पादन केन्द्रों पर दबाव कम होगा और वायुमंडलीय तापमान बढ़ने की रफ्तार भी कम होगी जो पृथ्वी पर जीवधारियों के लिए बहुत बड़ा खतरा बन सकती है। तो आइए, नव वर्ष में जीवमात्र के कल्याण का संकल्प लेते हुए इस दिशा में हर संभव प्रयास करें और परस्पर नव वर्ष का हार्दिक अभिनन्दन करें।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

प्रवीणभाई पटेल
सदस्य सचिव

समाचार दर्पण

- श्री देवेन्द्रपाल सिंह, सहायक निदेशक श्रे.। की कार्यपालक अभियंता के पद पर पदोन्नति हुई है। पदोन्नति पर श्री दे.पा.सिंह का हार्दिक अभिनन्दन !
- श्री जे.के. राठौड़, सहायक निदेशक श्रे.। की उप निदेशक के पद पर पदोन्नति और केविप्रा, नई दिल्ली में स्थानान्तरण पर हार्दिक अभिनन्दन !
- श्री विजय मूडि, जो कभी पक्षेविसमिति, मुंबई में आशुलिपिक श्रे.। के पद पर कार्यरत थे और स्थानान्तरण पर दक्षेविसमिति, बंगलौर गए थे, हाल ही में सदस्य सचिव के वैय.सचिव के पद पर पदोन्नत होकर 26 दिसम्बर 2007 को मुंबई लौटे हैं। श्री विजय मूडि का पदोन्नति और पक्षेविसमिति लौटने पर हार्दिक अभिनन्दन !
- श्रीमती सी.एन.उन्नीकृष्णन्, अ.श्रे.लि. की पुत्री सुश्री अनूपा ने महाराष्ट्र राज्य की जिला स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता में भाग लिया और तीसरा स्थान प्राप्त किया। साथ ही उन्हें राज्य स्तरीय शतरंज दल के लिए चुना जाने पर कोटिश आशीष !
- श्रीमती अदिति अ. पालकर, अ.श्रे.लि. के सुपुत्र मास्टर अमेय ने विद्यालयीन स्तरीय ऊँची कूद स्पर्धा में भाग लिया और स्वर्ण पदक जीता। हार्दिक अभिनन्दन !

श्रद्धांजलि

अपने कार्यालय की कर्मनिष्ठ और परिश्रमी महिला कर्मचारी श्रीमती ऋता रमेश राणे के पति श्री रमेश राणे का दिनांक 6 दिसम्बर 2007 को मस्तिष्काघात से निधन हो गया। इससे कार्यालय में प्रत्येक सहयोगी को गहरा आघात लगा है। इस कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी सर्वशक्तिमान परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति और मोक्ष प्रदान करने की और उनके शोकाकुल परिवार को उनका दुखद वियोग सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

वैश्विक ऊष्मता (ग्लोबल वार्मिंग)

सु.द.टाकसांडे,
अधी.अभि.(र.एवं से.)

वैश्विक ऊष्मता (ग्लोबल वार्मिंग) प्रकृति-मां की वह चीत्कार है जो उसके अपने ही बेटे-बेटियों द्वारा उससे किए गए दुर्व्यवहार का परिणाम है। यदि आप नहीं जगे, उससे अपने किए की क्षमा नहीं मांगी, अपने तौर-तरीकों (जीवन शैली) में सुधार करके और उस पर अपना प्यार बरसा कर उसे संतुष्ट नहीं किया तो आप पाएंगे कि आपकी आने वाली पीढ़ियां और जीव जन्तु, अगले 4-5 सौ वर्षों की अवधि में पृथ्वी नामक ग्रह से लुप्त होते जा रहे हैं और यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। एक भयंकर सच्चाई है। वैश्विक ऊष्मता की समस्या इतनी अधिक है।

इस प्रबंध में मैंने लगभग एक हजार शब्दों में तकनीकी शब्दजाल का उपयोग किए बिना यह समझाने का प्रयास किया है कि वैश्विक ऊष्मता क्या है, जलवायु, जीवित और निर्जीव वस्तुओं पर इसका क्या दुष्प्रभाव पड़ता है, इसके कारण क्या-क्या हैं और पारिस्थिक संतुलन बनाने के लिए क्या-क्या उपाय करने चाहिए।

पहला कदम तो इस प्राकृतिक प्रक्रिया / घटनाक्रम को समझने का है ताकि हम इसके बारे में कुछ कर सकें। यहाँ हम क्रमवार आगे बढ़ेंगे।

वैश्विक ऊष्मता क्या है ?

जैसाकि नाम से ही पता चलता है, वैश्विक ऊष्मता सभी ऋतों / मौसमों के औसत तापमान के स्तर में वृद्धि है। पृथ्वी के तापमान में पिछली सदी में लगभग 1.5° फारेनहाइट की वृद्धि हुई है और आने वाले वर्षों में यह वृद्धि और भी अधिक तेजी से होने वाली है। अगले 500 वर्षों में औसत तापमान 7° से 9° फारेनहाइट बढ़ेगा। यह कोई ऐसा मामला नहीं है जिसे कम्बल के नीचे ढक कर लम्बी तान ली जाए।

वैश्विक ऊष्मता के दुष्प्रभाव क्या होंगे ?

1. हिम नदों का का पिघलना - पहले से ही बर्फ पिघलने से बाद में जल अभाव पैदा हो सकता है।
2. बर्फीले पहाड़ों पर बर्फ पिघलने से समुद्रा का जल स्तर चढ़ेगा और तटवर्ती क्षेत्रों में पानी की बाढ़ आ जाएगी।
3. समुद्र की सतह अधिक गरम हो जाने से अधिक तीव्रता वाले तूफान / चक्रवात आ सकते हैं।
4. वनों, खेतों और नगरों में कीड़ों-मकोड़ों और सूक्ष्म जीवों से होने वाले रोग बढ़ जाएंगे।
5. प्रवाल भित्तियाँ और अल्पाइन घास के मैदान अनेक पौधों और जानवरों (जीव जन्तुओं) की प्रजातियों का समूल नाश कर सकते हैं अर्थात् पृथ्वी पर जीव जन्तुओं और पेड़ पौधों के अस्तित्व पर संकट।

संक्षेप में, वैश्विक ऊष्मता के दुष्परिणाम इतना विनाशकारी हैं कि समस्त जीवधारियों का अस्तित्व ही संकटग्रस्त नजर आता है। यह समझने के लिए कि वैश्विक ऊष्मता किससे पैदा होती है, हमें “ग्रीन हाऊस इफैक्ट” समझना होगा।

“ग्रीन हाऊस इफैक्ट” क्या है ?

कार्बन डाइ आक्साइड, नाइट्रिक आक्साइड, सल्फर डायआक्साइड और जल वाष्प का यह स्वभाव होता है कि वे वातावरण / वायुमंडल से ऊष्मा खींचते हैं और फिर उसे वापिस अन्तरिक्ष में नहीं जाने देते। पृथ्वी का तापमान संतुलित रखने के लिए प्रकृति ने यह उपक्रम रचा हुआ है। इस

प्राकृतिक ग्रीन हाऊस इफैक्ट के बिना पृथ्वी का तापमान 0° डिग्री फारेनहाइट होता, यद्यपि आज यह 57° फारेनहाइट है। यह ग्रीन हाऊस इफैक्ट है और इन गैसों को ग्रीन हाऊस गैस कहा जाता है। इन गैसों का नैसर्गिक अनुपात इस प्रकार से है कि जीवधारी जीव उस तापमान क्षेत्र में जीवित रहता है। किन्तु मानव सुख सुविधाओं के पीछे दौड़ते-दौड़ते कुछ ज्यादा ही लालची हो गया है। हमने वायुमंडल में इन ग्रीन हाऊस गैसों की मात्रा कई गुणा बढ़ा दी है और इस प्रकार इन गैसों में अधिक गर्मी इकट्ठी हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ जाता है।

वैश्विक ऊष्मता किस कारण होती है ?

हमने देखा कि ग्रीन हाऊस इफैक्ट हम सबको जीवित रखने के लिए प्रकृति की एक योजना है। फिर ऐसा क्या है जो इस ग्रीन हाऊस इफैक्ट को जीवधारियों के लिए घातक बना देता है। ये मानवीय कारगुजारियाँ या गतिविधियाँ ही हैं जिन्होंने वायुमंडल में ग्रीन हाऊस गैसों की सघनता बढ़ा दी है। औद्योगिक क्रांति के बाद हमने विद्युत शक्ति पैदा करने, स्टीम इंजन चलाने और ताप की अनेक आवश्यकताओं यथा धातु पिघलाने वाली भट्टियों में कोयला जलाना आरम्भ कर दिया। इसके अलावा पेट्रोलियम उत्पादों में चलने वाली मोटर गाड़ियों और इंजनों की संख्या भी बेहिसाब बढ़ी है। इस सभी फॉसिल ईंधनों के अनियंत्रित जलने ने वायुमंडल में अधिक ग्रीन हाऊस गैसों आकर मिली हैं जिससे वायुमंडल में विभिन्न गैसों का प्राकृतिक संतुलन गड़बड़ा गया है और वायुमंडल का तापमान बढ़ गया है। संक्षेप में, वैश्विक ऊष्मता की समस्या मानव निर्मित है। अतएव, इसके निराकरण हेतु कुछ करने का दायित्व भी हम मनुष्यों पर ही आता है। इससे न केवल अन्य जीवधारी एवं पेड़ पौधे निर्मूल होने से बचेंगे बल्कि मनुष्य जाति भी अनेक अनपेक्षित विपदाओं से बची रहेगी।

क्या किया जा सकता है ? ऊर्जा के समझदारीपूर्ण उपयोग और नवीनतम टेक्नोलॉजी के उपयोग से हम निश्चित रूप से वैश्विक ऊष्मता को कम कर सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित चार उपाय किए जा सकते हैं:-

- (1) ऊर्जा की दक्षता बढ़ाएं:- हम ऐसे विद्युत उपकरण इस्तेमाल कर सकते हैं जिनमें ऊर्जा कम लगती है। हम फ्लोरिसेंट लैम्पों (बल्बों) के स्थान पर सीएफएल लैम्प का प्रयोग कर सकते हैं। हम ऐसे मकानों और कार्यालयों को डिजाइन करें जिनमें प्राकृतिक प्रकाश और सौर ऊर्जा का उपयोग प्रकाश व्यवस्था तथा गरम करने इत्यादि के लिए किया जा सके। एयर कंडीशनर का तापमान 18° सेल्सियस या ऐसे ही कुछ की बजाय 24° सेल्सियस पर रखा जा सकता है। संक्षेप में, विद्युत ऊर्जा का उपयोग कम करना अपनी आदत बना लें और केवल तभी इस्तेमाल करें जब आवश्यकता हो। इस प्रकार हम विद्युत ऊर्जा के उत्पादन के लिए कोयले की खपत कम कर सकते हैं। (शेष अगले अंक में)

गज़ल

खूबसूरत हो दिल नशीं हो तुम।

तुम हो दिल में, तुम्हीं ख्यालों में।

तुम से गुलज़ार है चमन दिल का।

मैं भला मौत से डरूं क्यों कर।

मेरी आँखों की रोशनी हो तुम ॥

देखता हूँ तो हर कहीं हो तुम ॥

गो कि फूलों की ताज़गी हो तुम ॥

मेरी सांसों हो, जिन्दगी हो तुम ॥

-लक्ष्मण गुप्ता
